।। श्री गणेशाय नमः ।।

# श्री कात्यायनी शक्ति पीठ

## अर्बुदाचल

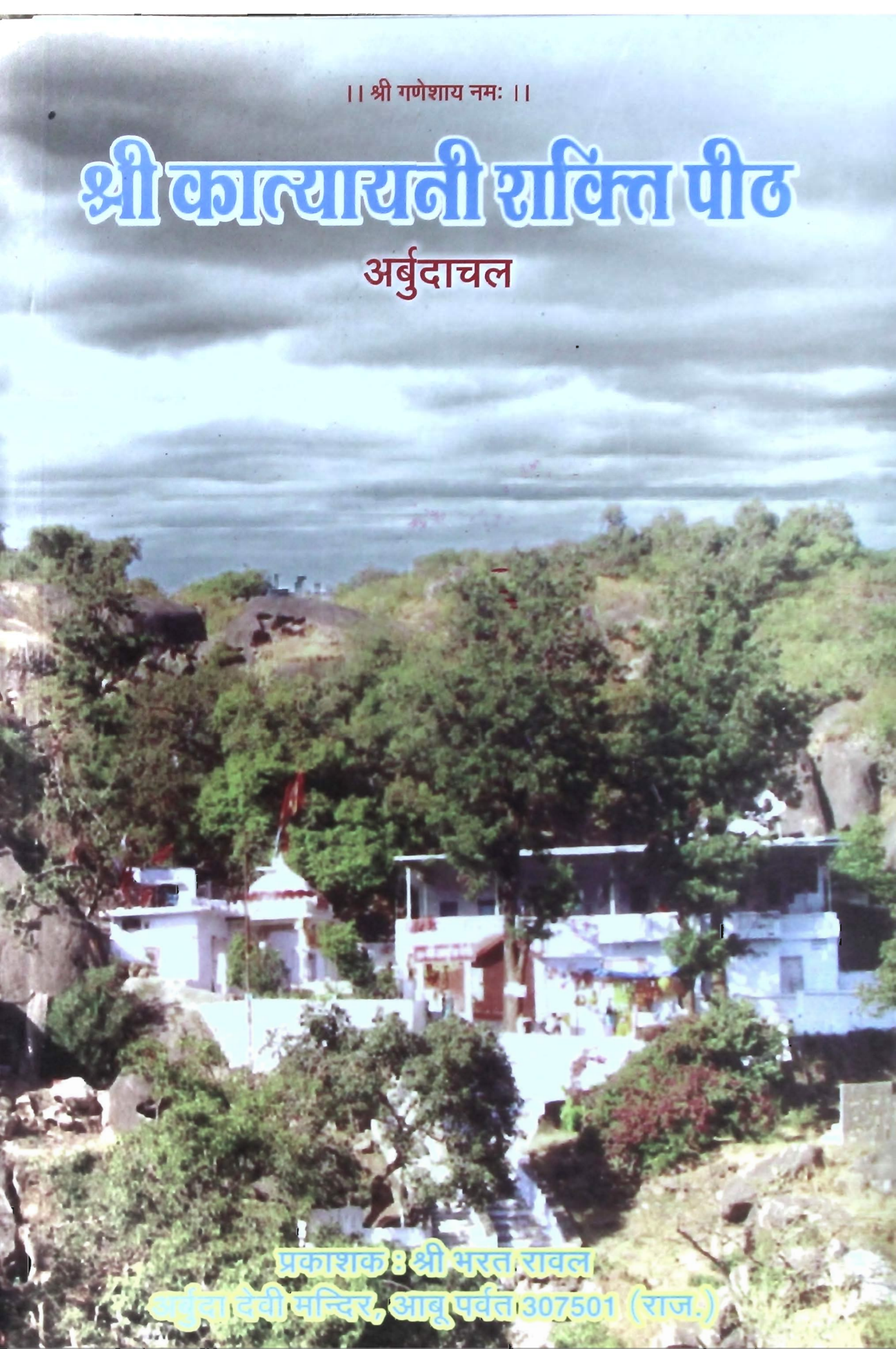

प्रकाशक : श्री भरत रावल
अर्बुदा देवी मन्दिर, आबू पर्वत 307501 (राज.)

जय श्री माता अर्बुदाजी
JAI ARBUDAMAA
प्रवेश द्वार
ENTRANCE

।। श्री गणेशाय नमः।।

# श्री कात्यायनी शक्ति पीठ
# अर्बुदाचल

## श्री अर्बुदा देवी मन्दिर नित्य आराधना क्रम एवं क्षेत्र माहात्म्य

प्रकाशक

श्री भरत रावल
अर्बुदा देवी मन्दिर
आबू पर्वत 307501 (राज.)

# विषयानुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | आमुख | iv |
| 2. | आशीस | v |
| 3. | समर्पण | |
| 4. | अर्बुदाचल की उत्पत्ति | 1 |
| 5. | आबू पर्वत की स्थिति | 6 |
| 6. | श्री अर्बुदा देवी– पौराणिक परिचय | 7 |
| | (अ) श्री पादुका माहात्म्य (ब) श्री कात्यायनी माहात्म्य | |
| 7. | आबू पर्वत के मुख्य तीर्थस्थल | 15 |
| 8. | अर्बुदाचल परिक्रमा के तीर्थस्थल | 16 |
| 9. | श्री अर्बुदा देवी मन्दिर परिचय | 18 |
| 10. | श्री अर्बुदा देवी मन्दिर उत्सव परिचय | 21 |
| 11. | श्री अर्बुदा देवी का कुल देवी के रूप में पूजन | 22 |
| 12. | आरती (1) श्री अम्बाजी की आरती | 26 |
| | (2) श्री देवीजी की आरती | 28 |
| 13. | नीराजन एवं पुष्पांजलि मंत्र | 30 |
| 14. | प्रातः स्तोत्र पाठ | 33 |
| 15. | सायं स्तोत्र पाठ | 36 |
| 16. | विविध स्तोत्र पाठ | 41 |

# आमुख

विगत कुछ वर्षों से श्री अर्बुदा देवी के मन्दिर के विषय में जानकारी के लिए लोगों का आग्रह था। प्रस्तुत पुस्तक में माताजी एवं मन्दिर के विषय में जानकारी देने का प्रयत्न किया गया है।

प्रात: स्मरणीय परम पूज्य परमहंस परिव्राजक संविदाचार्य स्वामी श्री ईश्वरानन्दगिरिजी महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद से ही यह कार्य सम्भव हो सका है। शब्दों के द्वारा उनके प्रति आभार प्रकट करना व उनसे अऋण होना सम्भव नहीं है। पुस्तक में जो भी त्रुटि रह गई है वह मेरी है, इसके लिये मैं पूज्य श्री से व पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ।

श्री अबुर्द पर्वत की महिमा जानने का शास्त्रीय व प्रत्माणिक स्रोत स्कंद पुराणान्तर्गत अर्बुद खण्ड है। वहीं से श्री पादुका माहात्म्य एवं श्री कात्यायनी माहात्म्य लेकर उसके हिन्दी अनुवाद का कार्य पण्डित श्री विजय मिश्राजी द्वारा किया गया है। इसे पुन: एक कथानक के रूप में एक साधक ने प्रस्तुत किया है। इनके प्रति हम आभारी हैं।

इस पुस्तक में नित्य प्रात: एवं सायं पूजा में आने वाले स्तोत्रों का संग्रह किया गया है। पूज्य स्वामीजी द्वारा रचित श्रीअर्बुदा भगवती स्तोत्र एवं अर्बुदा प्रात: स्मरण प्रमुख हैं। आदरणीय पूज्य स्वयंप्रकाशजी स्वामी(शंकर मठ) द्वारा रचित अधर देवी स्तोत्रम् एवं अधर देवी संकीर्तनम् भी सम्मिलित किये गये हैं। इन में आप का आशीर्वाद एवं स्नेह मिलता रहे। उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं।

*भरत रावल*

# समर्पण

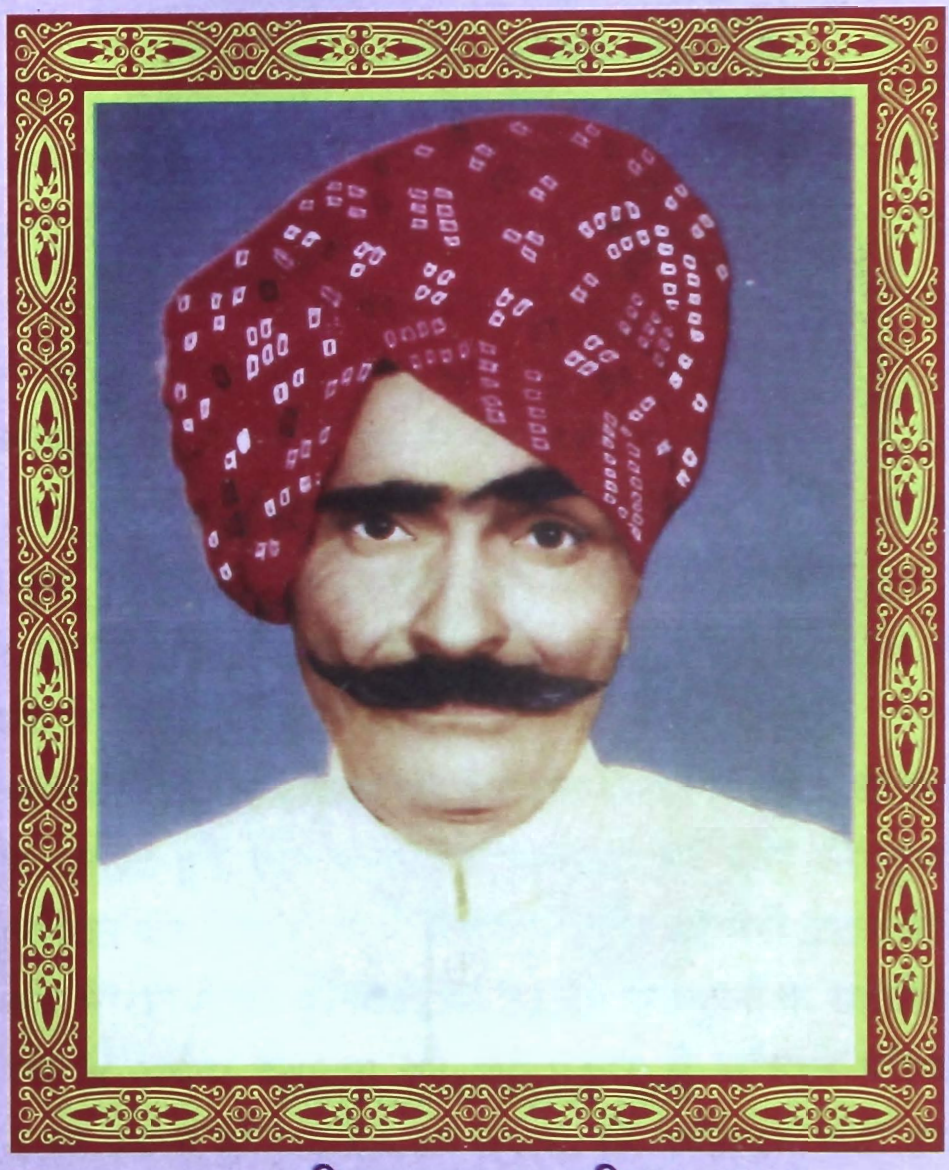

स्व. श्री प्रहलाद रामजी रावल

श्री अर्बुदा देवी मन्दिर

स्वर्गवास- मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी, संवत् 2033

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य

# स्वामी श्री ईश्वरानन्द गिरिजी

संस्थापक संवित् साधनायन, सन्तसरोवर आबू पर्वत

# आशीस

अबुर्दाचल निवास प्रारंभ किये मुझे चार युग (४८ साल)बीत गये। इस दीर्घकाल। नैरन्तर्य-सत्कार सेवन के फलस्वरूप अबुर्द पर्वतोत्तम ने मुझे जो अध्यात्म संपदा प्रदान किया, उस के मूल में भगवती अबुर्दा देवी विराजमान हैं। एक मास आबू वास में ही यह अवधारणा हुई थी कि अर्बुदा देवी की अनुमति के बिना यहाँ अनुष्ठान सफल नहीं हो सकेगा। भगवती ने बडे प्यार से बुलाया, दुलारा, मेरी आकांक्षा-आवश्यकता की बात सुनी, मुझे आश्वास दिया औरा चिन्ता-भय-मुक्त कर दिया। मेरे हर प्रकार के अनुष्ठान के हर कदम में उनकी प्रेरणा व वात्सल्य अनुभूत होते रहे। इस अनुभूति में एक सरस सुगमता आई जब अर्बुदा-मन्दिर के प्रमुख अर्चक (स्व.) श्री प्रह्लाद जी रावल एवं उनके परिवार के सभी सदस्यों की श्रद्धा-स्नहे का मैं भाजन बना। भगवती की सन्निधि में संवित्सपर्या होने लगी।

कालान्तर में श्री प्रह्लाद जी के स्थान पर उनके सुपत्र श्री भरत रावल आरूढ हुये और मन्दिर के संचालन को और भी सुन्दर, सुव्यवस्थित कर दिया। उन से ही मालूम हुआ की मेरी इष्ट देवी तो अंसख्य भारतियों की कुलदेवी भी है। उन भक्तकुलों के सहयोग व सौजन्य से अर्बुदा देवालय को कई प्रकार से सज्जित परिष्कृत करने का प्रयास हो रहा है। उस प्रयास की नवीनतम कडी हमारे सामने इस पुस्तिका के रूप से प्रकाशित हो रही है। इस में भगवती अर्बुदा देवी का प्रामाणिक परिचय प्राप्त होगा ही, साथ ही यहाँ

अनुष्ठित अपासना क्रम की भी पहचान मिलने से भक्त-साधक देवी की नित्य आराधना में सक्रिय भाग ले सकेंगे। इस प्रकाशन से एक लम्बे समय से अनुभूत कमी दूर हो जायेगी। यह अवश्य ही श्री अर्बुदेश्वरी के लिये सन्तुष्टिप्रद सिद्ध होगा। श्रीमाता की विपुल- कृपा -वृष्टि इस प्रकाशन के कार्यरत सभी सेवक - साधक- प्रायोजक सज्जनो पर होगी, ऐसी हमारी धारणा व शुभ कामना है। ये सब धन्यवाद के पात्र है, विशेष कर श्री भरत रावल, जिनके तीव्र आग्रह - अनुराग- आयास से ही यह संभव हुआ है।

कात्यायनि जगन्मातः संविदानन्दविग्रहे।
स्वीकृत्वैमां पत्रसेवां प्रसीद परमेश्वरि।।

वसन्त पंचमी
वि. संवत् २०६३

इति
ईश्वरानन्दगिरि

# अर्बुदाचल की उत्पत्ति

अर्बुदाचल (आबूपर्वत) प्राचीन तीर्थों में से एक है।इसकी उत्पत्ति के विषय में अलग-अलग मत प्राप्त है। इतिहासकार इसे हिमालय से भी प्राचीन मानते है, परन्तु पुराणों में अर्बुद पर्वत को ही हिमालय का पुत्र माना है। पुराणों में इसकी कथा allegorical प्रतीकात्मक है,जिसका रहस्य गुरुगम्य है।

अर्बुदाचल की उत्पत्ति एक अद्‌भुत रहस्य है जिसके तीन पटल हैं, एक आध्यात्मिक, दूसरा अधिदैविक और तीसरा अधिभौतिक। इन रहस्यों का उद्‌घाटन चिन्तक के मन में एक विचित्र अलौकिक चमत्कार उत्पन्न करता है।

आध्यात्मिक पक्ष श्री वसिष्ठादि ऋषियों से जुड़ा है, तो आधिदैविक पक्ष देवताओं और कात्यायनी भगवती के संवाद से जुडा है। आधिभौतिक पक्ष भूतत्ववेत्ताओं के लिए एक प्रश्नचिन्ह है, जिसपर शायद विशेष शोध नहीं हुआ।

अर्बुद के आध्यात्मिक और आधिदैविक महत्त्व का पता परम्परागत कथानकों और पुराणों से, विशेषकर स्कन्दपुराण के अर्बुद खण्ड से चलता है। यह कथानक जीवन के कुछ गूढ रहस्यों को सांकेतिक भाषा में प्रकट करते हैं। विशेष बात तो श्री गुरु परम्परा से जानी जाती है, जिसमें प्रवेश के लिए श्रद्धा, भक्ति और इन्द्रिय संयम की आवश्यकता होती है। यूं तो यह रहस्य आबू में रहने वाले अधिकांश लोगों को भी ज्ञात नहीं होता। अध्यात्म परम्परा आदि काल से जाग्रत रही है और हर पीढी में बड़े बड़े महात्माओं ने यहां आकर तपस्या की है, जिसका उल्लेख उनके शिष्यों से ज्ञात होता है। स्वामी विवेकानन्दजी भी यहाँ रहे

और नक्की झील के किनारे एक गुफा में तपस्या की। रामानन्द सम्प्रदाय की १९वीं पीढी श्री रघुनाथ मन्दिर में चल रही है। श्री गुरुदत्तात्रेय की माता अनुसूया व अत्रिऋषि का मन्दिर भी यहीं है, श्री गुरु दत्तात्रेय स्वयं यहां हजारों ऋषियों को उपदेश देते थे। उनका स्थान श्री गुरु शिखर नाम से विख्यात है। आधिभौतिक पक्ष में उल्लेखनीय बात यह है कि सारा अरावली परतीय प्रकार का पर्वत है, सिवाय अर्बुदगिरी के। अर्बुद ज्वालामुखी से उत्पन्न आग्नेय चट्टानों से बना है।

पुराणों के अनुसार प्राचीन काल में यहाँ पर विशाल मैदान था जो मरु प्रदेश कहलाता था। यहाँ कई ऋषि मुनि तपस्या किया करते थे।गौतम ऋषि के पास उत्तंक ऋषि अध्ययन किया करते थे। अध्ययन समाप्ति पर उन्होंने गौतम ऋषि को गुरु दक्षिणा मांगने को कहा। परन्तु ऋषि ने मना कर दिया। विशेष आग्रह करने पर ऋषि पत्नी अहल्या ने कहा कि सोदास की रानी जो कुण्डल पहनती है वे कुण्डल ला कर दो। बहुत कठिन प्रयास के बाद, उत्तंक ऋषि वे कुण्डल ले कर आ रहे थे। उन अमृत कुण्डलों को नाग व गन्धर्व भी लेना चाहते थे, इसलिए राजा सौदास ने उन्हें सावधान रहने को कहा था। रास्ते में संध्या समय होने से उत्तंक ऋषि उन कुण्डलों को मृगचर्म पर रख संध्योपासना में लीन हो गए। जब ध्यान से उठे तो मालूम हुआ कि तक्षक नाग कुण्डलों को ले कर पाताल चला गया है। उन्होंने अपने ब्रह्मदण्ड से उस नाग बिल को खोदना प्रारम्भ किया परन्तु कई दिनों तक कुछ भी पता

नहीं लगा। एक दिन देवराज इन्द्र ने उत्तंकऋषि से कारण पूछा तो ऋषि ने पूरा वृत्तांत सुनाया तब देवराज ने अपने वज्र से प्रहार कर पाताल पर्यन्त एक छिद्र कर दिया उसी मार्ग से प्रवेश कर अग्नि देव की सहायता से कुण्डल प्राप्त किए और वे कुण्डल गुरु पत्नी को प्रदान कर स्वयं अपने घर को प्रस्थान किया।

इसी गहरे खड्डे के निकट वसिष्ठ ऋषि अपने आश्रम में तप किया करते थे कि एक दिन वसिष्ठ ऋषि की कामधेनु नन्दिनी उस खड्डे में गिर गई। इसे ढूंढ़ते हुए ऋषि वहां पहुँचे और उसे बाहर निकालने के लिए सोचने लगे। उन्होंने ध्यान पूर्वक सरस्वतीजी का स्मरण किया और प्रार्थना की कि वह उस खड्डे को जल से भर दे। सरस्वतीजी द्वारा खड्डे को जल से भरने से नन्दिनी तैर कर स्वयं बाहर आ गई। खड़डा मानसिक अवसाद depression का प्रतीक है। कामधेनू इच्छापूर्ति शक्ति का प्रतीक है।

वसिष्ठजी ने सोचा कि इस घटना की पुनरावृति न हो इसलिए इस खाई को भर देना चाहिए। अत: उन्होंने पर्वतराज हिमालय से प्रार्थना की "आप अपने किसी पर्वत को भेज कर उस खड्डे को भरवा दें जिससे वहाँ का संकट हमेशा के लिए मिट जाए"। हिमालय ने विचार किया एवं कहा कि "महर्षि, देवराज द्वारा सभी पर्वतों के पंख काट दिए गए हैं और कोई भी पर्वत उस मरु प्रदेश में जाने का इच्छुक नहीं है"। तब महर्षि ने नन्दिवर्धन नामक हिमालय पुत्र नाम सुझाया परन्तु पुन: नन्दिवर्धन ने उस रुक्ष जगह पर जाने में असहमति जताई तब वसिष्ठ ऋषि ने उसे वरदान दिया कि तुम्हारे वहां जाते ही तुम्हारे ऊपर 33 करोड़ देवी देवता, ऋषि मुनियों व अपार वनस्पति उत्पन्न हो जाएगी। अत: तुम निश्चिन्त

होकर चलो"। नन्दिवर्धन को यहाँ तक लाने में अर्बुद नामक नाग ने मदद की थी। नाग कुण्डली शक्ति का प्रतीक है, नन्दिवर्धन योग समाधि का प्रतीक है।

अर्बुद नाग (कुण्डलिनी की अध्यात्मिक शक्ति) द्वारा हिमालय के नन्दिवर्धन क्षेत्र को यहां लाने के कारण यह गिरि शृंखला अर्बुदाचल कहलाती है। अर्बुद की उत्पत्ति जिस ज्वालामुखी के मुंह से हुई उसी को स्थिर करने के लिए श्री वसिष्ठ ऋषि ने शिवजी का आह्वान कर उनसे इस कांपते पर्वत को अपने अंगुष्ठ के स्पर्श से अचल करने की प्रार्थना की और वरदान प्राप्त किया कि जो कोई यहाँ शिव की आराधना अर्चना करे उसकी धर्म में अचल निष्ठा हो। इसलिए इस शिव का नाम अचलेश्वर हुआ। "अर्बुदाचल" का अपभ्रंश आबू हो गया।

अर्बुद में संकट निवारण हेतु विशेष प्रेरणाएं मिलती है। उत्तंग ऋषि ने इसी स्थान पर नागों द्वारा पाताल लोक में कुण्डल ले जाने पर हार स्वीकार नहीं की और अपने ब्रह्मदण्ड से धरती खोदनी शुरु की और इन्द्र व अग्निदेवता की सहायता से सफलता पाई। वसिष्ठ ऋषि की कामधेनु के खडडे में गिर जाने से हतोत्साहित नहीं हुये। और मानव मात्र के लिये अवसाद से बाहर आने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। पौराणिक कथानकों से ज्ञात होता है कि बाष्कल असुर ने जब स्वर्गलोक पर अपना अधिकार कर लिया तो देवता भी इसी पर्वत की शरण में आये और अपना राज्य उस असुर से वापस प्राप्त कर लिये।

अकबर से हारे जाने पर राणा प्रताप ने भी अर्बुद पर्वत की शरण ली और यहाँ के भीलों और गिरासियों की मदद से पुनः राज्य जीत लिया। श्री वसिष्ठ ऋषि के यज्ञ से दीक्षित अग्निवंशीय क्षत्रियों ने इस

क्षेत्र में मुगलों के पाँव नहीं जमने दिये और यहाँ की सांस्कृतिक वैभव अचलेश्वर, कन्याकुमारी, दिलवाडा आदि को मुगलों के आक्रमणों से सुरक्षित रखा। आबूपर्वत पर मुख्यत: लगभग 13 वीं शताब्दी तक परमार राजपूतों का शासन रहा। इस समय यहाँ पर कई कलात्मक निमार्ण हुए। इसी वंश के राजा धारावर्ष ने संवत् 1220 से 1276 तक आबू पर राज्य किया। इसके बाद देवड़ा चौहानों ने परमारों सें राज्य हथिया लिया और लगभग एक शतक तक राज्य किया। कुछ समय तक यह क्षेत्र महाराणा कुम्भा के आधिपत्य में भी रहा।

स्वतन्त्रता के बाद आबू सहित एक छोटा भाग तत्कालिक बम्बई में सम्मिलित रहा। एक नवम्बर 1956 से पुन: राजस्थान में मिला दिया गया। वर्तमान में आबूपर्वत सिरोही जिले का एक उपखण्ड है एवं आबू नगरपालिका की देखरेख में हैं।

ॐ

# आबू पर्वत की स्थिति

ऋषि मुनियों की तपो भूमि आबूपर्वत, राजस्थान के मरुस्थल में जहाँ एक ओर रेत के विशाल मैदान व टीले हैं दूसरी ओर दक्षिण पश्चिम में अरावली पर्वत माला के शिखर है वहां पर स्थित यह अपने सौन्दर्य व प्राकृतिक छटा के कारण राजस्थान का स्वर्ग कहलाता है

24.36 उत्तर अक्षांश तथा 72.45 पूर्व देशान्तर में अरावली पर्वत माला का एक भाग अर्बुदाचल (आबू पर्वत) है। अर्बुदाचल के प्रमुख शिखरों में भीमालिया हिल 4553 फीट, अधर देवी 4200 फीट ऊँचाई पर स्थित है।

इस पर्वत का सर्वोच्च स्थल गुरु शिखर 5653 फीट ऊँचा है जो उत्तर में हिमालय व दक्षिण में नीलगिरी पर्वत के मध्य सबसे ऊँचा है। अर्बुदाचल एक वन्य प्रदेश है। यँहा बांस, आम, करोन्दे, अमलतास, गुलमोहर खजूर, बुगनवेलिया, जेवरेन्डा, सिल्वर, ओक, कनैर, चम्पा, चमेली आदि के वृक्ष एवं फल फूलदार वृक्ष पाए जाते है। यहाँ की चम्पा व चमेली विख्यात है। जंगली जानवरों में चीते, भेड़िए, रीछ, लोमड़ी, तेंदुआ आदि बहुतायत में है। विभिन्न प्रकार के पक्षी व तितलियाँ भी यहाँ के सौन्दर्य में वृद्धि करती है। पश्चिम रेल्वे की बड़ी लाईन अहमदाबाद जयपुर दिल्ली मार्ग पर आबूरोड़ पर उतर कर सड़क मार्ग से **28** किमी. की दूरी पार कर यहाँ पहुँचा जाता है।

# अर्बुदा देवी - पौराणिक परिचय

## श्री पादुका माहात्म्य

(स्कन्द पुराण के सप्तम प्रभास खंड में अर्बुद खण्ड के बाईसवें अध्याय पर आधारित )

प्राचीन काल में दानव राजा कलिंग (जिसका दूसरा नाम बाष्काली था) ने शिव से बुढ़ापा व मृत्यु वर्जित जीवन का वर प्राप्त किया था। इस वर के बल से उसने इन्द्रादि देवताओं को पराजित कर देवलोक पर भी अधिकार कर लिया। यज्ञ भाग रहित देवता अर्बुदाचल के जगंलो में छिपकर, विविध प्रकार के व्रत नियम तपादि से पराशक्ति श्रीमाता को प्रसन्न करने में जुट गये। एक हजार वर्ष की उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर देवी पहले धूम्र रूप में फिर ज्वाला रूप में, फिर श्वेत वस्त्र धारी कन्या के रूप में प्रकट हुई। इस रूप में देवी के दर्शन कर देवता बड़े संतुष्ट हुये और हाथ जोड़कर उन्होंने देवी की स्तुति की।

" देवाऊचुः" ।।

*नमऽस्ते सर्वगे देवी नमस्ते सर्वपूजिते।*
*नमऽस्ते कामणकचिन्त्ये नमस्ते त्रिदशाश्रये।।*
*नमऽस्ते परमादेवी ब्रह्मयोने नमो नमः।*
*अर्धमात्रे क्षरे चैव तस्यार्धाधै नमो नमः।।*
*नमस्ते पद्मपत्राक्षि विश्वमातर्नमो नमः।*
*नमस्ते वरदे देवि रजः त्वं सत्व तमोमयि ।।*

*स्वस्वरूपस्थिते देवी त्वं च संसार लक्षणम्।*
*त्वं वृद्धिस्त्वं धृतिः क्षांतिस्त्वं स्वाहा त्वं स्वधा क्षमा।।*
*त्वं वृद्धिस्त्वं गतिः कर्त्री शची लक्ष्मीश्च पार्वती।*
*सावित्री त्वं च गायत्री अजेया पापनाशिनी।।*
*यच्चान्यदत्र देवेशि त्रैलोक्ये ऽस्तीतिसंज्ञितम्।*
*तद्रुपं तावकंदेवि पर्वतेषु च संस्थितम्।।*
*वह्निना च यथा काष्ठं तंतुना चथा पटः ।*
*तथा त्वया जगद् व्याप्तं गुप्ता त्वं सर्वतः स्थिता।।*

स्तुति सुनकर जगन्माता ने देवताओं से कहा "वर मांगो । इस त्रिलोकी में मेरे भक्तों को कहीं कोई भय नहीं फिर आप गुप्त भाव से इस पर्वत पर क्यों रह रहे हो?" देवताओं ने कलिंग द्वारा स्वर्गादि के अपहरण और अपने यज्ञ भाग से रहित होने की सारी आपदा उन्हें सुनाई और वर मांगा कि आपकी कृपा से उनका राजा इन्द्र, दानवों को मार कर वापस अपना पद प्राप्त करें।

देवी ने कहा- " जैसे मैने तुम्हारा सृजन किया वैसे ही इस महासुर का भी। मेरे लिये दोनों में कोई विशेष भेद नहीं है। मैं स्वर्ग लोक से दानवों को हटा दूंगी। ऐसा कहकर श्रीमाता ने दूत भेजकर उस दैत्य राजा को युद्ध के लिए आमन्त्रण दिया।

उसके उत्तर में वह दानव भारी सेना लेकर क्रोध युक्त हो शीघ्र

ही अर्बुद पर्वत पहुँचा। उसे देखते ही इन्द्रादि देवता, देवी के रोकने पर भी पलायन करने लगे।

तब उसकी ओर देख देवी धीरे से हँसी और उनके मुख से अति भीषण चतुरंगिणी सेना निकली, जिसने सारे दानवों को मार डाला। पर दैत्य राज अजर अमर होने से बच गया। इस पर देवताओ ने देवी से कहा- " हे देवी! आप ही इस दानव को मारने में समर्थ है। इसके जीवित रहते हुये हमारा स्वर्ग पर राज नहीं होगा। देवताओं की बात सुनकर, दानव की अजरता अमरता का विचार करके उसके निग्रह के लिए देवी ने एक महान पर्वत-शिला, उस दानव पर रख दी और स्वयं उस शिला पर जगत कल्याण के लिए बैठ गई। पुलस्त्य ऋषि राजा ययाति से बोले ..... वह जगन्माता, इच्छा शक्ति स्वरूपा, जगतहित के लिए आज भी उस श्रेष्ठ पर्वत पर विराजमान है। मनुष्यों की क़ामनाओं की सिद्धि देने वाली वह माता वहीं पर साक्षात् निवास करती है।

फिर देवताओं ने प्रसन्न मन से भय हारिणी माता की स्तुति की। माता ने प्रसन्न हो कहा कि सभी देवता कष्ट रहित होकर अपने स्थान को ग्रहण करें। फिर देवेन्द्र को वर मांगने को कहा तो इन्द्र ने यही मांगा कि "जब तक वह स्वर्ग का राजा हो तब तक माँ यहीं विराजमान रहे-क्योंकि वह दैत्य शिव के द्वारा अजर अमर है। माँ की कृपा से दोनों लोक दुःख व्याधि रहित रहें।

इन्द्र ने कहा सब देव मिलकर चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को आकर आपकी पूजा दर्शन करेंगे। और उस दिन आपका दर्शन कर सभी सद्गति को प्राप्त हों।

*अत्र त्वां पूजयिष्यामो वयं सर्वे समेत्यच ।*

*चैत्र शुक्ल चतुर्दश्यां दृष्ट्वा त्वां यांतु सद्गतिम् ।।"*

ऋषि बोले- इन्द्र, देवी के प्रभाव से पुनः स्वर्ग गमन कर गए एवं देवी देवों की हितकामना से अर्बुद पर्वत पर स्थित हुई। जो इनके दर्शन चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को करता है वह ज़रा मरण रहित हो मोक्ष को प्राप्त होता है।

*यस्तां पश्यति चैत्रस्य चतुर्दश्यां सिते नृप ।*

*स याति परमं स्थानं ज़रा मरण वर्जितम् ।।*

*व्रत नियम —संसार के बंधनों में नहीं रहता।*

**ऋषि बोले -**

अर्बुद पर्वत पर देवी का दर्शन सुलभ हो जाने से लोग यज्ञ, दान, तप, तीर्थ आदि करने की बजाय, देवी के दर्शन पाकर उत्तम लोकों को जाने लगे। इससे देवताओं को कष्ट हुआ क्योंकि वे यज्ञभाग व पूजा अर्चना से रहित हो गये। नरक भी ख्राली हो गये। उन्होंने अर्बुद पर्वत पर श्रीमाता से विनती की कि पृथ्वी लोक पर यज्ञादि सभी क्रियाएं नष्ट हो गई है। पापी लोग भी आपका दर्शन कर पूर्वजों सहित स्वर्ग जा रहे है। इसलिए हम अति पीड़ित है। वे ऐसा करें जिससे उन्हें यज्ञभागादि भी मिल जाये और बाष्कली दैत्य भी वापस न निकल सके।

देवी ने देर तक चिन्तन कर अपने पादुका चिन्ह उस शिला पर

काल भैरव दर्शन

प्रथम प्राकृतिक द्वार पर श्री गणेशजी व हनुमान जी

मध्यम मण्डपम्

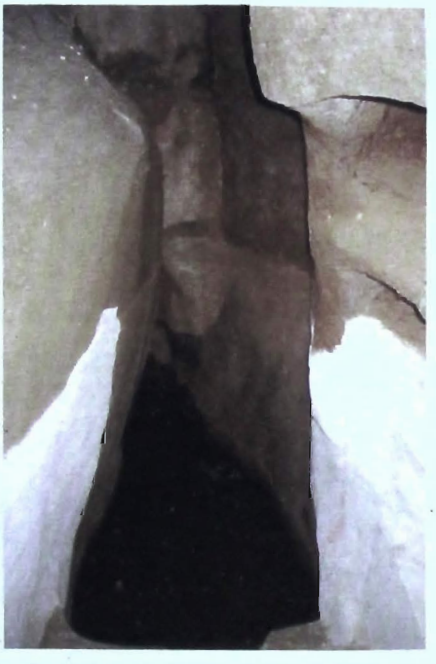

अमृत कुण्ड़

छोड़ दिये जिसके नीचे बाष्कली दबा पड़ा था। उन्होंने देवताओं से कहा कि "बाष्कली से रक्षा के लिये, इस शिला पर मैं अपनी पादुकायें रख के जा रही हूँ। मेरी पादुकाओं के भार से वह निश्चल रहेगा। जो इनकी शास्त्रानुसार पूजा करेगा उसे वह सिद्धि प्राप्त होगी जो मेरे दर्शनों से होती है। चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को मैं दिन रात गुप्त रूप से गुफा में निवास करूँगी।

*चैत्र शुक्ल चतुर्दश्यामहमत्रार्बुदे सदा।*
*अहो रात्रिः वसिष्यामि सुगुप्ता गिरिगह्वरे।।*

यह पर्वत मेरा बहुत प्रिय है इसे छोड़ने की इच्छा नहीं होती। फिर देवताओं और किन्नरोंने उनकी स्तुति की और स्वर्ग चले गए।"

**पुलस्त्य ऋषि बोले-**

इस प्रकार देवताओं को संतुष्ट कर वह देवी अपनी पादुका वहीं शिला पर छोड़ कर गुफा में पधारी। जो इस आख्यान को पढ़ता है या इसकी प्रेम से स्तुति करता है वह सब पापों से छूटकर ज्ञान योग में तत्पर हो जाता है।

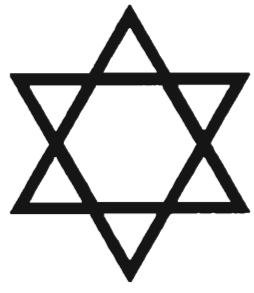

# कात्यायनी माहात्म्य

(स्कन्दपुराण के अर्बुदखण्ड के चौबीसवें (२४) अध्याय पर आधारित) अर्बुदपर्वत वासिनी श्रीमातापराशक्ति के माहत्म्य का परिचय हमें स्कन्द पुराण के सप्तम प्रभास खण्ड के अन्तर्गत अर्बुदखण्ड में, पुलस्त्य ऋषि और राजा ययाति के संवाद में मिलता है। ऋषि इस विषय में राजा को एक कथानक सुनाते है- जिसका संक्षेप वर्णन यहाँ किया जा रहा है।

अर्बुद पर्वत के मुख्य तीर्थों का संक्षेंप में माहात्म्य-कथानक सुनकर, पुलस्त्य ऋषि स्कन्द- पुराणान्तर्गत अर्बुद खण्ड का उपसंहार करते हुये राजा ययाति को बताते हैं कि "यहाँ इतने असंख्य तीर्थ व पुण्य क्षैत्र हैं कि सौ वर्षों में भी उनका वर्णन मुश्किल से होगा। जो इस सुरम्य अर्बुद पर्वत पर निवास करते हैं उनके जैसे पुण्य तो उनके भी नहीं है जो स्वर्ग में रहते हैं। वह जीवन धन जप किस काम का जो, अर्बुद दर्शन प्राप्त न हो। कीड़े, पतंगे, पशु-पक्षी, जुंए आदि भी निष्काम भाव से या कामना से यहाँ मृत्यु पाते है तो वे जरा मरण रहित शिव सायुज्य पाते है। इसी क्षैत्र में एक मुख्य तीर्थ है कात्यायनी तीर्थ-जिसका इतिहास राजा को बताते हुये ऋषि उसे वहाँ जाने की सलाह देते हैं।

ऋषि राजा को बताते है कि "शुम्भ दैत्य का नाश करने वाली

देवी कात्यायनी अर्बुदा गुफा में निवास करती है आप वहाँ जायें।

प्राचीन काल में शुम्भ नाम का एक महा दैत्य था। भगवान शंकर के वरदान से वह देव-दानव, राक्षस आदि किसी से भी रण में अवध्य था। परन्तु स्त्री द्वारा वध्य था उसने सारे संसार और देवताओं को जीत लिया। त्रस्त देवता अर्बुदाचल आकर शुम्भ दैत्य के वध के लिए तपस्या करने लगे। उन्होंने यहाँ देवों के व्यक्त रूप की आराधना की। देवी ने प्रसन्न हो उन्हें वर मांगने को कहा-देवो ने निवेदन किया कि शुम्भ दुरात्मा ने उनका सब हरण कर लिया है, माता पहले भी आपने हमारी रक्षा बाष्कली से की थी। आज भी आप ही हमारी रक्षा करें। देवों की बात सुनकर देवी शुम्भ के यहाँ गई और क्रुद्ध होकर बार-बार उसकी भर्त्सना की और उसे युद्ध के लिए उत्प्रेरित किया। इस पर भी उसे स्त्री जान शुम्भ दैत्य युद्ध के लिए आगे न आया और युद्ध के लिए दानव सेना भेज दी।

दानव दशों दिशाओं से देवी को घेर कर ललकारने लगे। देवी ने अवलोकन मात्र से उन्हें भस्म कर दिया। इसके बाद शुम्भ स्वयं आया और खड्ग उठा कर "ठहर ठहर" ऐसा कहा। तब देवी के अवलोकन मात्र से वह भस्म हो गया। जो दैत्य शेष रहे थे वे पाताल चले गये।

संतुष्ट देवों ने देवी की स्तुति कर कहा कि "आपके मन में जो हो वह वर दीजिए। देवी बोली-मैं यहीं अर्बुद में स्थित रहुँगी क्योंकि

यह सदा मेरा अभीष्ट रहा है। देवों ने कहा-यहाँ आपके ठहरने से मरने वाले प्राणी बिना यज्ञ, दान, तप, के ही स्वर्ग पहुँच कर उसे हमारे लिए संकीर्ण कर देते है।

देवी बोली-मैं वहां विजन रम्य गुफा में रहुँगी। विरले प्राणी ही मेरा दर्शन कर पायेंगे

देवो ने कहा-हे देवी आपको जैसा अभीष्ट हो सो कीजिए। हम सदा शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को आपके दर्शन करेंगें।"

**पुलस्त्य ऋषि राजा से बोले-**

प्रसन्न होकर देव लोग चले गए और माता वहाँ एकान्त में जगत् हित के लिए स्थित हो गई। जो कोई शुक्ल अष्टमी को इन माता का समाहित होकर दर्शन करता है वह अपना अभीष्ट पा लेता है चाहे वह दुर्लभ ही क्यों न हो।

***यस्तां पश्यति राजेन्द्र शुक्लाष्टभ्यां समाहितः।***

***अभीष्टं स सदाप्नोति यद्यापि स्यात्सुदुर्लभम् ।।***

उपरोक्त वर्णन श्रीस्कन्द पुराण के सप्तम् प्रभास के तृतीय अर्बुद खण्ड के कात्यायनी माहात्म्य नाम के चौबीसवें अध्याय पर आधारित है।

# : आबू पर्वत के मुख्य तीर्थस्थल :

आबू पर्वत का नाम मन में आते ही दिलों दिमाग एवं मानस पटल पर एक ही बात छा जाती हैं, और वह बात सिर्फ एक ही होती है कि हम प्राचीन काल की उस देव भूमि के बारे में बात कर रहे हैं जहाँ कि 33 करोड़ देवी-देवता निवास कर रहे है, जहां ऋषिमुनि अपनी तपस्या में रत अपने इष्ट को मनाने का प्रयास करते ओझल रूप से नजर आ जाते हैं। जिस तरह यहाँ देव निवास करते हैं उनका महत्व है उसी तरह यहाँ के तीर्थ स्थलों का भी जन मानस में अधिक महत्व है। इस देव नगरी के प्राचीन एवं वर्तमान ज्ञात तीर्थ स्थलों का परिचय निम्न है:-

**१. गौमुख (वसिष्ठ आश्रम)** **२. नक्की तालाब**

**३. श्रीहनुमान मन्दिर** **४. गणेश टेकरी**

**५. श्रीरघुनाथजी मन्दिर** **६. श्री दुलेश्वर महादेव मन्दिर**

**७. श्रीबिहारी जी मन्दिर** **८ शंकर मठ मन्दिर**

**९. नीलकण्ठ महादेव मन्दिर** **१०. अग्नेश्वर महादेव, मन्दिर**

**११. श्रीअर्बुदादेवी (अधर देवी)मन्दिर**

**१२. श्रीसोमनाथ महादेव सन्त सरोवर**

**१३. कन्या कुमारी मन्दिर, देलवाड़ा**

**१४. जैन मन्दिर, देलवाड़ा**

**१५. श्रीअचलेश्वर महादेव मन्दिर, अचलगढ़**

**१६. गुरु दत्तात्रय मन्दिर, गुरु शिखर**

# अर्बुदाचल परिक्रमा

आबू की परिक्रमा का अपना विशेष महत्व है यह परिक्रमा लगभग 150 किलोमीटर की है तथा इस परिक्रमा के पथ में लगभग 20, 22 तीर्थ स्थलों का अपना विशेष महत्व है जो निम्न प्रकार से है।

१. श्रीवास स्थानजी - भक्त यहाँ भगवान् के दर्शन लाभ पाते है एवं यहाँ रात्रि विश्राम करना अपने आप में अलग ही आनन्द प्रदान करता है, क्योंकि रात्रि विश्राम में दन्तकथानुसार यह माना जाता है कि यहीं पर ३३ करोड़ देवी देवताओं ने रात्रि विश्राम किया था। इस लिए इस स्थान को विश्राम या वासस्थान के नाम से जाना जाता है।

२. केदारनाथ, बद्रीनाथ (नित्तोड़ा)

३. तू ही रामजी की धूंणी (ख्राख्रर बाड़ा)

४. कांशीन्द्रा (पुराना कांशी)

५. नागपुरा (जहाँ पर नाग के पूँछ की पूजा होती है)

६. बरमाणीया महादेव

७. मुख्ररी माताजी (तलहटी)

८. ऋषिकेश भगवान्

९. भद्रकाली माताजी

१०. मधवाजी (मुंगथला)

११. पाटनारायणजी (शिखर)

१२. हनुमानजी (पालड़ी)

१३. करोड़ीध्वज, सूर्य मन्दिर (अनादरा)

१४. नागतीर्थ, नाग के फन की पूजा (नागाणी)

१५. देवागनजी

१६. अंजनी माता (उत्तंक ऋषि का आश्रम)

१७. सदका जी (सिद्धि का जी)

१८. पाटलेश्वर महादेवजी

१९. देवखेतर जी (असावा)

२०. कुण्डेश्वर महादेवजी

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि इस अरावली पर्वत माला की तलहटी में कई तीर्थ स्थानों का अपना महत्व है तथा इसकी चोटी के मध्य में अर्बुदाचल पर गुप्त एवं प्रत्यक्ष तीर्थ भी है इस प्रकार एक तरफ तीर्थ यात्रा का दर्शन लाभ मिलता है वहीं शारीरिक पीड़ा दूर करने हेतु कई प्रकार की जड़ी बूटियाँ भी इस वन प्रदेश में विद्यमान है।

## अर्बुदा देवी (अधरदेवीजी) मन्दिर परिचय :-

अरावली पर्वत माला की इन सुन्दर एवं विशाल पहाड़ियों पर प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारते हुये यात्रा करने वाली जनता को अधर देवी माताजी के मन्दिर पर जाने के लिए उस मुख्य चौराहे पर पहुँचना होता है जो मुख्य बाजार से उत्तर की ओर लगभग **2** कि.मी. दूरी पर स्थित है। वहाँ समुद्र तल से **4220** फीट की ऊँचाई पर एक बहुत बड़ी गुफा में देवीजी का स्थान है।

यह मन्दिर लगभग **5500** वर्ष पुराना है। मन्दिर तक पहुँचने के लिए **350** सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है। स्कन्द पुराण के अर्बुदा खण्ड में कात्यायनी माहात्म्य के नाम से अर्बुदाजी का वर्णन वेद व्यासजी द्वारा किया गया है। यह भारत के प्राचीन तीर्थों में से एक है। भगवती सती के 'अधर' अंग प्रतिष्ठित शक्ति पीठ के होने से 'अधर देवी' के नाम से प्रसिद्ध है।

**मुख्य चौराहे पर "राजद्वार" बना हुआ है जिसका निर्माण सन् 2000 में हुआ था। यहीं से माताजी के मन्दिर की सीमा प्रारम्भ होती हैं। सीढ़ी प्रारम्भ होने से पहले ही हनुमानजी का मन्दिर है एवं उस मन्दिर के पीछे ही एक प्राकृतिक बावड़ी बनी हुई है। इस बावड़ी का नाम "दूध बावड़ी" है। ऐसी मान्यता है कि इस बावड़ी में प्राचीन काल में दूध भरा रहता था जिसका उपयोग ऋषि मुनि किया करते थे। इस बावड़ी की यह विशेषता है कि भयंकर अकाल में भी इसका जल सूखता नहीं**

है। यहाँ से आगे आने पर "मध्य मण्डप" आता है जिसे संत सरोवर के श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य पूज्य स्वामी जी **"श्री ईश्वरानन्द गिरिजी"** महाराज ने 30.10.2001 को माता जी के श्री चरणों में अर्पित किया था। यहाँ पहुँचने पर क्लांत भक्त तनिक विश्राम करते हैं तो उनके भीतर नूतन ऊर्जा का संचार होता है। इसके दर्शन लाभ के बाद आगे आने पर सीढ़ियाँ समाप्त हो जाती है तथा हम मन्दिर के प्रवेश द्वार पर पहुचँते हैं। यह संगमरमर का बना आकर्षक द्वार सन् 2003-04 में माताजी के भक्तों द्वारा बनवाया गया था। द्वार में आराधना के बाद हम दो पहाड़ों के बीच पहुँच जाते हैं जो इसका प्रवेश द्वार कहा जाता है। यहाँ पर सबसे पहले हम श्रीगणेशजी एवं हनुमानजी के दर्शन पाते हैं। आगे बढ़ने पर एक प्राकृतिक "अमृत कुण्ड" के दशर्न होते है जिसमें हमेशा ही स्वच्छ जल भरा रहता है। आगे जाने पर द्वितीय प्राकृतिक द्वार है एवं इसके सामने ही माताजी के द्वारपाल के रूप में "भैरव" का दर्शन होता है। इस से आगे माताजी के दर्शन के लिए गुफा में प्रवेश करना पड़ता है जिसका जीर्णोद्धार 21.4-2006 को सम्पन्न हुआ था। मन्दिर के "मूलद्वार" के सामने ही "यज्ञमण्डप" है जिसका जीर्णोद्धार बसंत पंचमी संवत् 2062, 2.2.2006 को सम्पन हुआ था।

"प्रवेश द्वार" के अन्दर माता जी की भव्य प्रतिमा है, जो कि अपने अलौकिक रूप के लिए विश्व विख्यात है। मन्दिर पूर्ण रूप से एक प्राकृतिक गुफा में हैं एवं माताजी के दर्शन का विशेष महत्व है। प्रत्येक शुक्ल पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को दर्शन का और भी विशेष महत्व रहता है।

श्री भरत रावलजी का परिवार अपनी पिछली दस पीढियों की

परम्परा से प्राप्त, अर्बुदामाता की पूजा-अर्चना, देखरेख और आगंतुकों की सेवा कार्य श्रद्धा, भक्ति व कुशलता से निभा रहे हैं। उन्होनें ने वर्तमान में जीर्णोद्धार और यात्रियों की सुविधा के कई कार्य किए हैं।

मन्दिर में यात्रिओं के लिए जैसे बिजली,पानी, बर्तन धर्मशला आदि सभी सुविधाएँ पूर्ण रूप से निशुल्क उपलब्ध है।

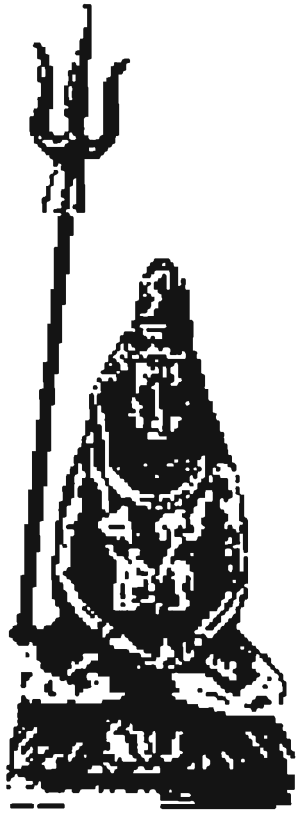

# अबुर्दा देवी का उत्सव परिचय

यहाँ मनाये जाने वाले त्यौहारों और उत्सवों में नवरात्री का विशेष महत्व है,जब विशेष पूजा श्रृंगार किया जाता है। चैत्र महीने की नवरात्री में शुक्ल चतुर्दशी को रात्रि में यज्ञ का आयोजन होता है और पूर्णिमा को यज्ञ की पूर्णाहुति होती है। स्कन्द पुराण के अनुसार चैत्र शुक्ल चर्तुदशी के दिन दर्शन करने मात्र से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन यहाँ भारी मेला भी भरता है। आश्विन मास की नवरात्री में अष्टमी रात्री यज्ञ प्रारम्भ हो कर नवमी को यज्ञ की पूर्णाहुति होती है।

वैशाख शुक्ला द्वितीया को यज्ञ होता है एवं अक्षय तृतीया को यज्ञ की पूर्णाहुति हो कर ध्वजा चढ़ा कर उत्सव सम्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त सनातन धर्म के सभी महत्त्वपूर्ण उत्सव यहाँ उत्साह पूर्वक मनाए जाते हैं।

मन्दिर प्रशासन नियमानुसार माताजी का कैमरे से फोटो खींचना पूर्णरूप से निषेध है

यहाँ मनाये जाने वाले अन्य त्यौहारों में मुख्यत: शरद पूर्णिमा, दीपावली, देव दिवाली, होली, महाशिवरात्री आदि हैं। प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की चौदस एवं पूर्णिमा को यहाँ पर मेला लगता है।

इस रमणीय स्थान आबू पर्वत के आस पास चौदह छोटे-छोटे गांव स्थित है इन गाँवों के राजपूत समाज के लोगों का वर्ष भर में दो बार आषाढ़ एवं श्रावण में मेला भरता है। वे अपने घरों का दूध इन दिनों विक्रय नहीं करके खीर बनाकर माताजी को प्रसाद चढ़ाते हैं।

# अर्बुदादेवी का कुलदेवी के रूप में पूजन

अर्बुदाचल पर्वत की अधिष्ठात्री श्री अर्बुदा (अधर) देवी परमार वंश की कुलदेवी के रूप में पूज्य हैं। पूर्वकाल में हैहेय वंश के राजा कार्तवीय अर्जुन नाम के राजा थे जिसकी एक हजार भुजाएँ थीं । उन्हें अपने बाहुबल पराक्रम का इतना अभिमान था कि जमदग्नि ऋषि का सिर काट कर उसकी कामधेनु का अपहरण कर अपने अधीन कर लिया था। जमदग्नि ऋषि के पुत्र श्रीमान् परशुराम को जब पता चला तो उन्होने प्रण किया कि "मैं पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर दूंगा"। तब उन्होने अपने फरसे से सहस्त्रबाहु अर्जुन की सभी भुजाऐं काट कर उसे मार डाला तथा जैसे जैसे क्षत्रिय उत्पन्न होते उनका अपने फरसे से संहार कर देते थे। इस प्राकर परशुराम जी ने क्षत्रियों का 21 बार संहार किया और समस्त राज्य ब्राह्मणों को दे दिया। ब्राह्मण विद्या व तपस्या के धनी थे वे राज्य नहीं सम्भाल सके व शासन व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई।

तब महात्मा वसिष्ठजी ने विशाल सर्वमेध महायज्ञ का आयोजन किया उस महान यज्ञ में चार देवताओं का आह्वान किया गया तथा आहुतियों के द्वारा प्रधान देवताओं के अंशो से अत्यन्त तेजस्वी पराक्रमी अस्त्रों से सुशोभित चार पुरूष उत्पन्न हुए। वसिष्ठ जी ने देवराज इन्द्र के अंश से उत्पन्न पुरुष का नाम परमार, शिव के अंश से सोलंकी, विष्णु के अंश से चौहान एवं ब्रह्माजी के अंश से उत्पन्न का

नाम परिहार रखा, तथा उन्हे 'राजपुत्र' की संज्ञा से विभूषित किया और अलग अलग स्थान को अपने शासन के लिये अपना अधिकार सौंप दिया। इनमें परमार व चौहान ने भारत व्यापी शासन किया।

परमारों में बड़े पराक्रमी व धर्म में आस्था रखने वाले राजा हुऐ। परमारों का शासन मध्य भारत व उत्तर भारत में था जिसमें परमार राजाओ में मुख्य धारावर्ष व जगदेव परमार बडे ही पराक्रमी व धर्म निष्ठावान राजा हुऐ हैं। उन्होने अपनी कुल देवी माँ अर्बुदा देवी को साक्षी मान कर भारत वर्ष में शासन किया। ऐसी किंवदन्ती है कि राजा जगदेव परमार ने कुलदेवी मां अर्बुदा के चरणों में अपना सिर चढ़ा दिया था। परमार वंश के अन्दर कई शाखाऐं हैं जो माँ अर्बुदा देवी को अपनी कुल देवी के रूप में पूजते हैं। वे इस प्रकार हैं-

परमार, नाहर, सांखला, बावेल, बोरड, दरडा, हरखावत, रांका, बन्दामुथा, नागौरी गोमतीवाल ब्राह्मण, कुशलोत, झाडोलीया, डागी, सोडा, पंवार, बरडीया, बरड, सादलीया परिवार, श्री सरतानपरा घाघाटी वीसा श्रीमाली जैन परिवार, बोहरा, बरड बालवत, राठी झाला तथा अन्य कई गोत्रो की कुलदेवी अर्बुदा ही है।

आजणा चौधरी भी पहले क्षत्रिय परिवार से ही थे। परशुराम जी के भय से जो क्षत्रिय डर के मारे भागते रहे, उनमें से कुछ क्षत्रिय माँ अर्बुदा के चरणों में आकर गुफा में छुप गये थे तथा मां के आशीर्वाद से उनकी रक्षा हुई। तब से वे आजण चौधरी नाम से प्रसिद्ध हुये और वे अर्बुदा देवी को अपनी कुलदेवी के रूप में पूजने लगे।

# आरती

# आरती

## श्रीअम्बाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय  श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।।१।। जय अम्बे.
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको।।२।। जय अम्बे.
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गले माला, कण्ठन पर साजै ।।३।। जय अम्बे.
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।।४।। जय अम्बे.
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती।।५।। जय अम्बे.
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।६।। जय अम्बे.
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।७।। जय अम्बे.
ब्रह्माणी, रूद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ।।८।। जय अम्बे.

चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू।।९।। जय अम्बे.
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ।।१०।। जय अम्बे.
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी ।।११।। जय अम्बे.
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ।। १२।। जय अम्बे.
(श्री) अम्बेजी की आरति जो कोइ नर गावैं।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै ।। १३।। जय अम्बे.

# श्रीदेवीजी की आरती

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जग.
तू ही सत्- चित्-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर -शिव सुर - भूपा ।।१।। जग.
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी।। ।।२।। जग.
अविकारी, अघहारी, अकल,कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी ।।३।। जग.
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।।४।। जग.
राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणी सब बाधा ।।५।। जग.
दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ।। ६।। जग.
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ।।७।। जग.
सुर-मुनि-मोहिनी सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट -स्वरूपा, प्रलयमयी धारा ।।८।।

तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ।।९।। जग.
मूलाधारनिवासिनि, इह - पर - सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे ।।१०।। जग.
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी ।।११।।जग.
हम अति दीन दुखी मा! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।।१२।। जग.
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै ।।१३।। जग.

ॐ

# नीराजन एवं पुष्पांजलि मन्त्र

## ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखसंदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।
घण्टाशूलहलानि शङ्ख मुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

## नीराजन

ॐ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्यभासा सर्वमिदं विभाति।
माया कुडंलिनी क्रिया मधुमती काली कलामालिनी।
मात्तङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शांभवी।।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी।
ह्रींकारी त्रिपुरा परात्परमयी माता कुमारीत्यसि।।

अन्तस्तेजो बहिस्तेजः एकीकृत्यामितप्रभम्
त्रिधा देवी परिभ्राम्य नीराजनं निवेदये ।।
समस्तचक्रचक्रेशी-युते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकं मयादत्तं गृहणाशेषसिद्धये।।
श्रीमात्रे नमः नीराजनं दर्शयामि।

## जलआरती

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूँ) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूँ) शान्तिः शान्तिरेवशान्तिःसा मा शान्तिरेधि।
श्रीमात्रे नमः जलारार्तिकं समर्पयामि।

## प्रदक्षिणा

सर्वमंगललाभाय सर्वपापनिवृत्तये।
प्रदक्षिणां करोम्यम्ब प्रसीद परमेश्वरि ।।
श्रीमात्रे नमः प्रदक्षिणां समर्पयामिः

## पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं
वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यम्।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं

महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सर्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतरस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा सभासद इति।

ॐ विश्वतस्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्व-तस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमति संपतत्तैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्ठाम्।
दुर्गां देवी शरणं प्रपद्या-महेसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।।

पुष्पांजलिं गृहाणेमां परब्रह्मस्वरूपिणि।
भक्त्या समर्पितं देवि प्रसन्ना भव सर्वदा ।।

श्रीमात्रे नमः मन्त्रपुष्पाजंलिं समर्पयामि।

## नमस्कार

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिराविताम्।
हस्तेश्चक्रगदासिखेटविशखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
श्रीमात्रे नमः नमस्करोमि।

# प्रातः स्तोत्र पाठ

## देवी प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्जलाभां
सद्रत्नवन्मकरकुडलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।
प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड-
शुम्भासुरप्रमुखदानवनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां
चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्।।
प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः।।

# श्रीअर्बुदादेवी प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि जगदम्ब! मुखारविन्दम्
श्रीनीलकण्ड नयनभ्रमराभिरामम्।
सूर्याग्नि सोममय नेत्रसुशोमानम्
कात्यायिऽनीति कथितेऽर्बुददेवते ते।।१।।

प्रातर्भजामि भुवनेश्वरि पुण्यनाम
ते कुंकुमार्चनविधौ नियतं सभक्त्या।
संवित्परं सकलपापहरं विचित्रम्
मातस्तवार्बुदगुहानिलये सुशीलो।।२।।

प्रातर्नमामि श्रुतिशीर्षलसत् पदाब्जम्
नीराजितं विधिमुखामरमौलिदीपैः।
क्षिप्तं शिलोपरि कलिगंविमर्दनाय
देव्याऽर्बुदाद्रि शिखरे भवभावनाय।।३।।

# ललितापंचकम्

प्रात:स्मरामि ललितावदनारविन्दं,
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलफालदेशम् ।।१।।

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गु लिपल्ल्वाढ्याम्।
माणिक्य-हेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुण्ड्रेक्षुचाप कुसुमेषु सृणीर्दधानाम् ।।२।।

प्रातर्नमामि ललिता चरणारविन्दं
भक्तेष्टादाननिरतं भवसिन्धुपोतम् ।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
पद्मांकुशध्वजसुदर्शनलांछनाढ्यम्।।३।।

प्रात: स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्यसृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विश्वेशरीं निगम- वाङ्. मनसातिदूराम् ।।४।।

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेशवरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ।।५।।

य: श्लोकपंचकमिदं ललिताम्बिकाया:
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विमलसौख्यमनन्तकीर्तिम् ।।६।।

# सायं स्तोत्रपाठ

## देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा:।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।१।।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव: सन्ति सरला:
परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुत:।
मदीयोयं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपिकुमाता न भवति ।।३।।

जगन् मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवी द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरूपमं यत्प्रकुरूषे
कुपुत्रो जायेत क्वाचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवा कुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।५।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंकोरंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।६।।

चिता भस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपातिः
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानी त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।।७।।

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपतः ।।८।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।९।।

आपत्सुमग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशिवे।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।।१०।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परावृतः नहि माता समुपेक्षते सुतम्।।११।।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ।।१२।।

**इति श्रीशंकराचार्य विरचितं स्तोत्रम् संपूर्णम्**

# कालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपंकजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।१।।

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।२।।

शूलटङ्क पाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।३।।

भक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थिरं समस्तलोकविग्रहम्।
निक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।४।।

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णकेशपाशशोभिताङ्गनिर्मलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।५।।

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रभूषणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।६।।

अट्टहासभिन्निपद्मजाण्डकोशसंततिं
दृष्टिपातनष्टपाप जालमुग्रशासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।७।।

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासिलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।८।।

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधकं विचित्रपुण्यवर्धनम्।
शोकमोहलोभदैन्यकोपतापनाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम्।।९।।

इति श्रीशंकराचार्य विरचितं कालभैरवाष्टकम् संपूर्णम्

# लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितालिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ।।१।।
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि..... ।।२।।
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गं ।
सिद्धसुरासुरवंदितलिङ्गं तत्प्रणमामि... ।।३।।
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गं ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि... ।।४।।
कुंकुमचन्दनलेपितलिङ्गं पंकजहारसुशोभितलिङ्गं ।
संचिततापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि.... ।।५।।
भूतगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गं ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि.... ।।६।।
अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गं ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि.... ।।७।।
सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गं ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि..... ।।८।।
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।९।।

# अधरदेवी संकीर्तनम्

जाननीमर्बुदसंस्था वन्देऽधरदेवीम्
उन्नतमुकुटाभरणां वन्देऽधरदेवीम् ।
सस्मितवदनाम्भोजां वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।१।।
अचिन्त्यचरितां कन्यां वन्देऽधरदेवीम्
पद्मदलाक्षीं वरदां वन्देऽधरदेवीम् ।
त्रिगुणां त्रिगुणातीतां वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।२।।
क्षमास्वरूपां करूणां वन्देऽधरदेवीम्
सर्वदेवतारूपां वन्देऽधरदेवीम्।
भक्ताभक्तसुरक्षां वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।३।।
अभयंकरीममोघां वन्देऽधरदेवीम्
अविषमदर्शनशीलां वन्देऽधरदेवीम्।
कक्षीकृतसुरपाक्षां वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।४।।

श्रीमातरं समेषां वन्देऽधरदेवीम्
सत्यकामनां सत्यां वन्देऽधरदेवीम्।
पूर्णबलामबलाभां वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।५।।
कामदायिनीं जगतां वन्देऽधरदेवीम्
भयहन्त्रीं प्रसन्नां वन्देऽधरदेवीम्।
कल्याणीं कमनीयां वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।६।।
विद्याप्रदानचतुरां वन्देऽधरदेवीम्
यतिसम्पूजितचरणां वन्देऽधरदेवीम्।
मयिसदया भव मातः वन्देऽधरदेवीम्
सकलमनोरथसिद्धिं वन्देऽधरदेवीम् ।।७।।
चतुर्दश्यां चैत्रे सुदि गिरिगुहायां भगवती
समर्चापुण्येनाऽमितरतिः किं मृगयते
श्रेयस्व श्रीमातुश्चरणामलं सर्वफलेदम् ।।८।।

# अर्बुदाभगवतीस्तोत्रम्

श्यामां दिनाद्ययजनेरुण पद्मरागां
देवीं प्रदोषसमये च हिरण्यवर्णाम्।
संवित्प्रभां सकलमूर्तिषु निर्विकल्पां
तामर्बुदां भगवतीं प्रणतोस्मि भक्त्या।।१।।

सौम्यां सदा हृदि सतां ललितस्वरूपां
क्रूरां च दुष्टमनसां धृतघोररूपाम्
शूलासिपात्र-फलवर्यकरां पराम्बाम्
तामर्बुदां भगवतीं प्रणतोस्मि भक्त्या ।।२।।

ब्रह्मादिपंच-समलंकृत-मंच-मध्यां
ज्ञानक्रियाबलवतीं जनिताण्डकोटिम्।
कैवल्यधामफल-धारण-कल्पवल्लीं
तामर्बुदां भगवतीं प्रणतोस्मि भक्त्या ।।३।।

सिद्धां वशिष्ठभृगुगौतम-सिद्धिदात्रीं
नित्याचलेश्वर -निरीक्षणचञ्चलाक्षीम्
सिंहाधिरूढसुमुखीं शशिखण्डमौलिं
तामर्बुदां भगवतीं प्रणतोस्मि भक्त्या ।।४।।

वात्सल्यसारपरिपूर्ण-विशालनेत्रां
योगीशसेवित-कुलामृतवृष्टिरूपाम्।
षट्पद्मकाननचरां प्रणव द्विरेफा
तामर्बुदां भगवतीं प्रणतोस्मि भक्त्या ।।५।।

श्रीमद्यतीन्द्र-परिभावित-ब्रह्मरूपां
गुह्योपदेशकुशलां गिरिगर्भविष्टाम्
श्रुत्यन्तगीतविभवां विरतिप्रहृष्टां
तामर्बुदां भगवतीं प्रणतोस्मि भक्त्या ।।६।।

अर्बुदाम्बा पदाम्भोजं यः स्मरेन् नियमान्वितः
अनेन श्लोकषट्केन भवद्देवीप्रसादभाग्।।

*अबुर्दाभगवतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।*

# रात्रिसुक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ।।१।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहां त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।२।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।।३।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।।४।।

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।।५।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।।६।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।।७।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।।८।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।।९।।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।।१०।।
यच्च किञ्चित् क्वाचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तुयसे तदा ।।११।।
यया त्वया जगस्त्रष्टा जगत्पात्यति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्तवां स्तोतुमिहेश्वरः ।।१२।।
विष्णुः शरीरग्रहणमहतीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्तवां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।।१३।।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारै र्देवी संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ।।१४।।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ।।१५।।

# अधरदेवी स्तोत्रम्

आराधयामिहृदयोऽधर नामदेवी
सौम्यां समुन्नतकिरीटधरां त्रिनेत्राम्।
हस्ताम्बुजेषु दधती कलशं त्रिशूलं
शक्तिं च खर्परमजां मृगराजवाहाम्।।१।।
या नन्दिवर्धनदयावशगा सुराणां
सम्प्रार्थनेन कृपया कुहरेऽर्बुदीये।
आविर्बभूव भवहेतुरहेतुरद्या
सा मे सदैव वरदाऽधरदेविकाऽस्तु ।।२।।
आवास्यमेतदचरं सचरं जगत्यां
यत्किचंनाऽस्ति जगदीशि सदा भवत्या।
त्यागेन तेन परिपालितजीवितस्य
मुक्तिस्त्वदीयपद पंकजपूजनेन ।।३।।
त्वत्प्रेषितं मन इतस्तत एति मूढम्
आकृष्टमक्षति च तन्मनसो मनस्त्वाम्।
या नोऽमता न सुमता मनसाऽपि मातः।
याता गुरोः पदमुमा कृपया त्वमेव।।४।।
एकेश्वरी द्विविधमात्ममनुं विधत्ते-
उन्नतं जगच्च विदिता सुखमातनोति।
ख्याता परा गतिरगेन्द्रसुता शरण्या
कोटीश्वरी विजयतेऽर्बुद पूजनीया ।।५।।
कल्याणीप्सिमदायिनी सुकृतिनामारोग्यसंवर्धनी
सद्विद्यासु गतिप्रदानचतुरा धर्मप्रियाऽकामिनी
प्रत्याङ्गमोक्षमनुः स्वभावमधुरा लक्ष्यष्टकोत्सर्जनी
श्रीमाताऽर्बुदगाह्वरे प्रकटिता पायादयायात् सदा ।।६।।

# भवानीभुजंगप्रयातस्तोत्रम्

षडाधारपंकेरुहांतर्विराजत्सुषुम्नांतरालेऽतितेजोल्लसंतीम्
सुधामंडलं द्रावयंतीं पिबंतीं सुधामूर्तिमीडेऽहमानंदरूपाम् ।।१।।
ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणांगीं सुलावण्य शृंगारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिंजल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं
भजे श्री भवानीम् ।।२।।
क्वणत्किंकिणीनूपुरोद्भसिरत्नप्रभालीढलाक्षार्द्र पादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैः सुरैः सेव्यमानां महोदेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयामि ।।३।।
सुशोणांबराबद्धनीवीविराजन्महारत्नकाञ्चीकलापं नितंबम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्रो वली रम्यते रोमराजीं भजेऽहम् ।।४।।
लसद्वृत्तमुत्तुंग.माणिक्यकुम्भोपमश्रीस्तनद्वंद्वमम्बांबुजाक्षीम्।
भजे पूर्णदुग्धाभिरामं तवेदं महाहारदीप्तं सदा प्रस्नुतास्यम् ।।५।।
शिरीषप्रसूनोल्लसद्बाहुदंडैर्ज्वलद्बाणकोदण्डपाशांकुशैश्च।
चलत्कंकणोदारकेयूरभूषोज्ज्वलाद्भिःस्फुरन्तीं भजे श्रीभवानीम् ।।६।।
शरत्पूर्णचन्द्र प्रभापूर्णबिंबाधरस्मेरवक्त्रारविंदश्रियं ते।
सुरत्नावलीहारताटंकशोभां भजे सुप्रसन्नामहं श्रीभवानीम् ।।७।।
सुनासापुटं पद्मपत्रायताक्षं यजन्तः श्रियं दानदक्षं कटाक्षम्
ललाटोल्लसद्गन्धकस्तूरिभूषोज्ज्वलभ्दिः
स्फुरन्तीं भजे श्रीभवानीम् ।।८।।
चलत्कुण्डलंते भ्रमद्भृङ्गवृन्दां घनस्निग्धधम्मिल्लभूषोज्जलंतीम्।
स्फुरन्मौलिन्माणिक्यमध्येंदुरेखाविलासोल्लसद्दिव्यमूर्धानमीडे ।।९।।

स्फुरर्तवम्ब बिम्बस्य मेहृत्सरोजे सदा वाङ्मयं सर्वातेजोमयंच।
इति श्री भवानीस्वरूपं तवेदं प्रपञ्चात्परं चातिसूक्ष्मं प्रसन्नम् ।। १०।।
गणेशाणिमाद्याखिलैः शक्तिवृन्दैः स्फुरच्छ्रीमहाचक्रराजोल्लसन्तीम् ।
परां राजराजेश्वरीं त्वां भवानीं शिवांकोपरिस्थां शिवां भावयेऽहम् ।।११।
त्वमर्कस्त्वमग्निस्त्वमिन्दुस्त्वमापस्त्वमाकाशभूवायवस्त्वं चिदात्मा।
त्वदन्यो न कञ्चित्प्रकाशोऽस्ति सर्वं सदानन्दसंवित्स्वरूपं तवेदम् ।।१२।
गुरुस्त्वं शिवस्त्वं च शक्तिस्त्वमेव त्वमेवासि माता पिताऽसि त्वमेव।
त्वमेवासि विद्या त्वमेवासि बुद्धिर्गतिर्मे मतिर्देवि सर्वं त्वमेव।।१३।।
श्रुतीनामगम्यं सुवेदागमाद्यैर्महिम्नो न जानाति पारं तवेदम्।
स्तुतिं कर्तुमिच्छामि ते त्वं भवानि क्षमस्वेदमम्ब प्रमुग्धः किलाहम् ।।१४
शरण्ये वरेण्ये सुकारुण्यपूर्णे हिरण्योदराद्यैरगम्येऽतिपुण्ये।
भवारण्यभीतं च मां पाहि भद्रे नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि ।।१५।।

इति श्रीशंकराचार्य विरचितं स्तोत्रम् संपूर्णम्

हार्दिक शुभकामनाओ सहित :

ATC
ARBUDA

# ARBUDA TRADING CO.

## VIJAY TRADING CO.

## KSHETRAPAL TRADING CO.

## POTATO & ONION COMMISSION AGENT

33, 111, 32, Chimanbhai Jivabhai Patel Market,
(AIMC) Vasna Tolnaka, Ahmedabad-380055.

**(O) 26810502, 26810660, 26839333**
**(R) 65439133, 22110491**
**Mobile : 9824096285 Hansraj bhai**
**Mobile : 9825084334 Rupesh bhai**
**Mobile : 9825506833 Vijay bhai**

हार्दिक शुभकामनाओ सहित :

✯ पप्पा की पसंदगी
✯ मम्मी की खरीदी

माया®
साबुन

# माया सोप फेक्टरी

**मोती लाल लुम्बाजी, प्रजापति**

सोनी की चाली
2 खीयाल, अमदाबाद
फोन: 22740927, 22741222

हार्दिक शुभकामनाओ सहित :

# ARBUDA
## BANGLES

AB
ARBUDA

# AMBAJI
## BANGLES

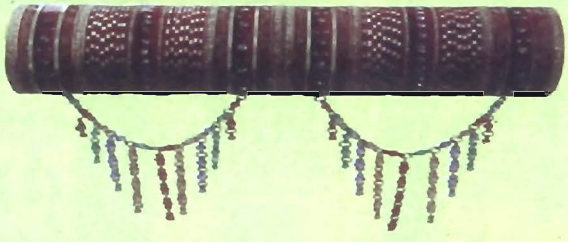

**Wholesale Dealers in**
**Plastic Bangles & Novelties**

**Golden Market, Pankore Naka, Ahmedaba-380001.**
**Ph.: 25353293, 65459470 (O)**
**A.G Mobile : 9327090609, 9426305241**

हार्दिक शुभकामनाओ सहित :

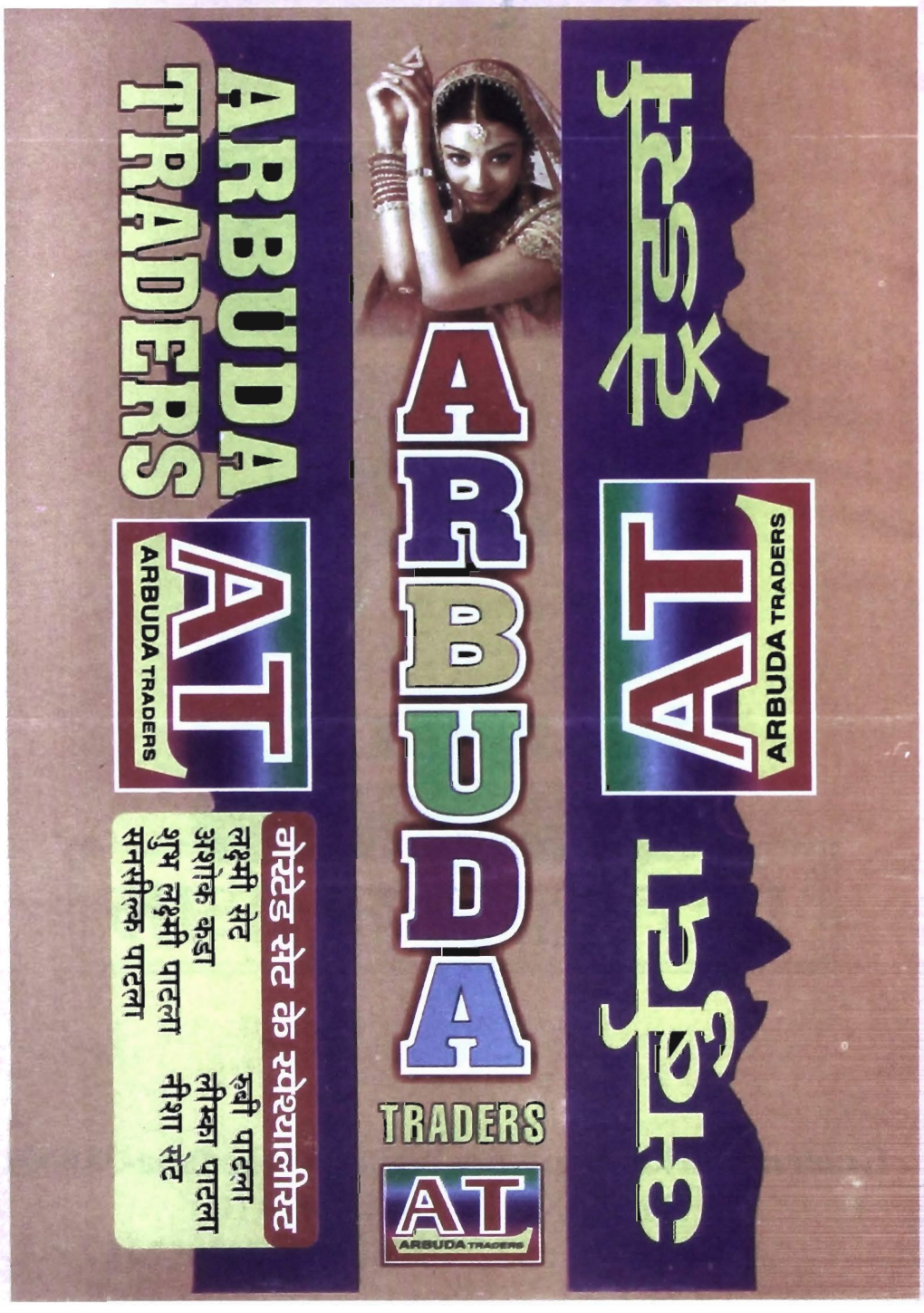

ॐ श्री अर्बुदा देवी

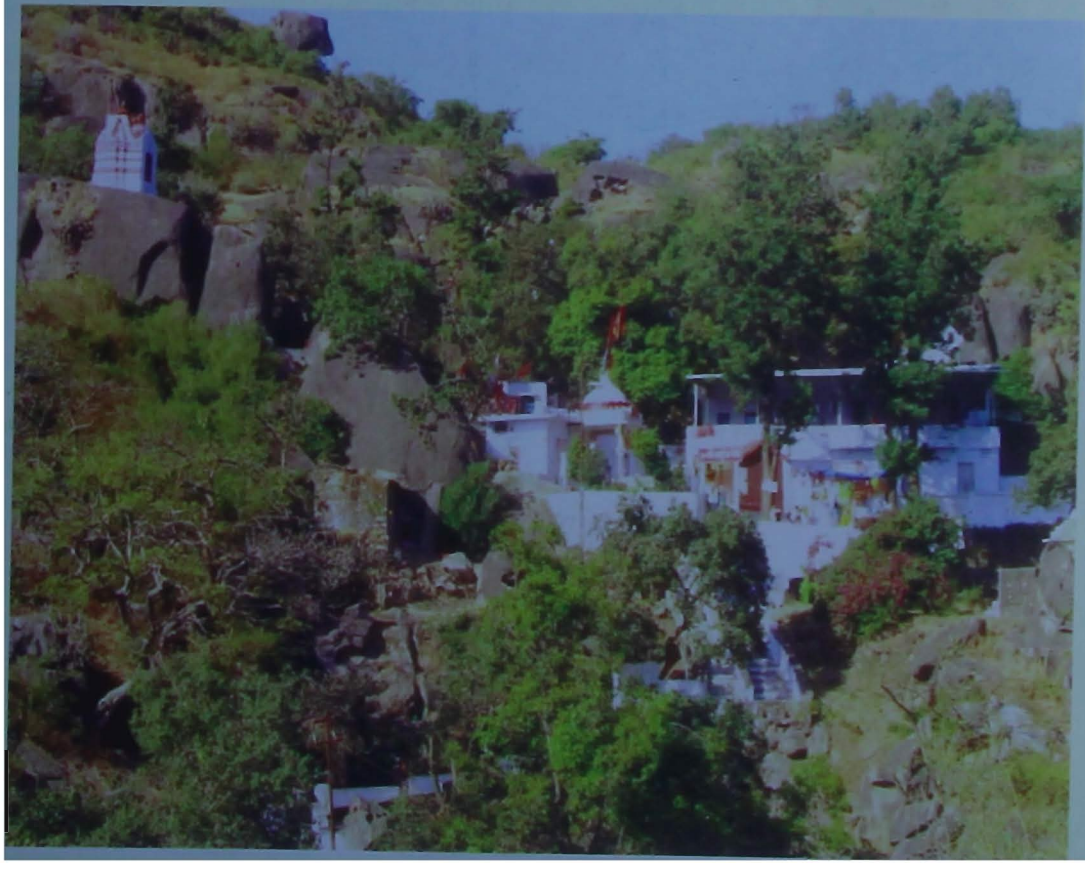

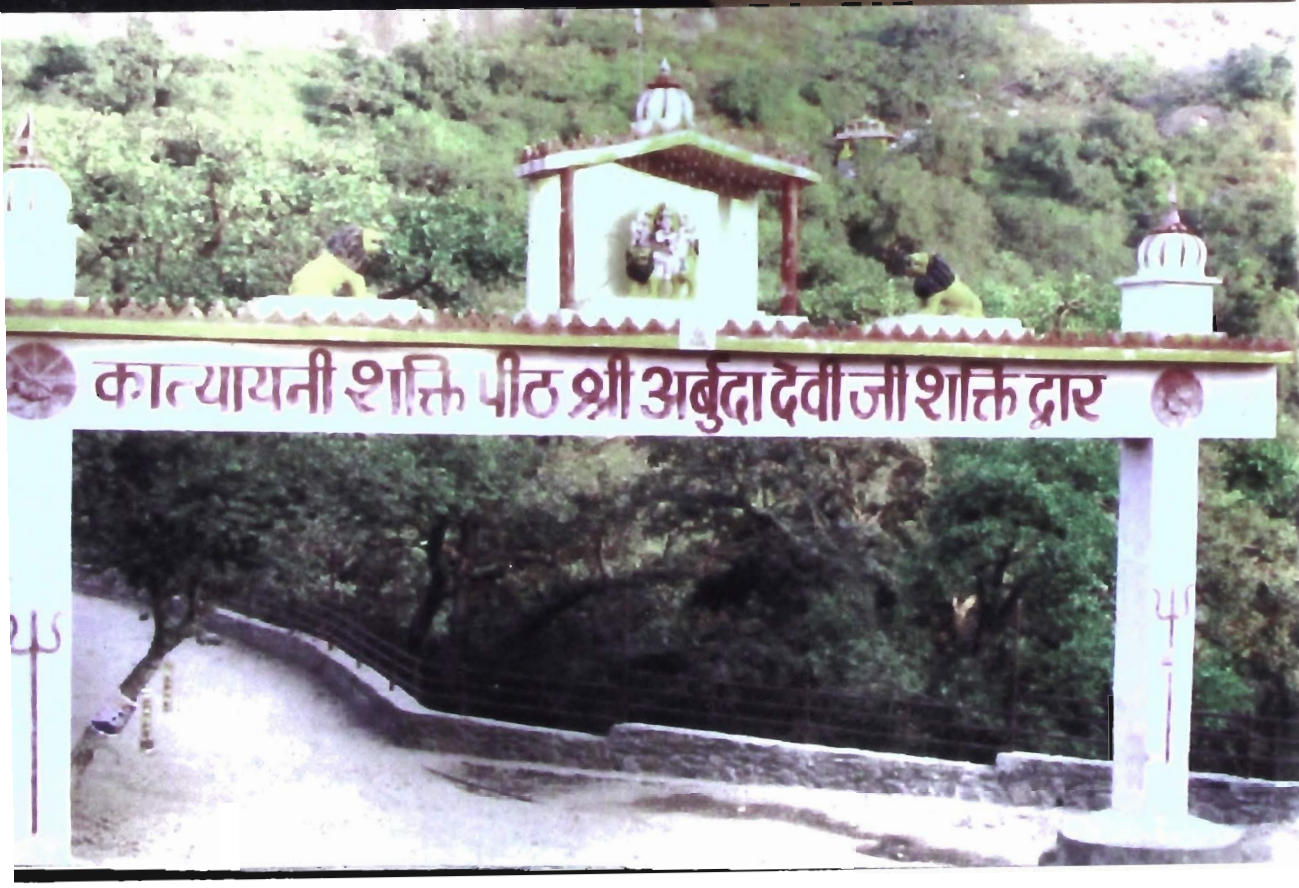
कात्यायनी शक्ति पीठ श्री अर्बुदा देवी जी शक्ति द्वार